आज की मुरली का सहज सार ---------- Date: 11-07-2014

बाबा ने आज ज्ञान को स्पष्ट करते हुए समझाया, मीठे बच्चे - शांतिधाम पावन आत्माओं का घर हैं, उस धर में चलना है तो संपूर्ण पावन बनो.

इस बेहद के सृष्टि चक्र में हम आत्माये पूरा 84 जन्मो का चक्र लगाते हैं. हम इसमें अति सुख और अति दुख भी देखते हैं. सतयुग के शुरू में हम आत्मायें, परमधाम से नीचे पार्ट बजाने आते हैं तो कितना पवित्र, सुख, शांति, आनंद और प्रेम से भरा हमारा जीवन हैं और उसके सामने अब इस काली-कलयुगी भ्रष्टाचारी, विकारी और दुखी आत्माओं की दुनिया में हम अपना लास्ट जन्म देखे तो हमें स्वतः यह पुरानी दुनिया से वैराग्य आ जाता हैं.

बाबा ने कहा, जब से हम आत्मायें द्वापर के बाद, देह-अभिमान में आती है तब से हमारे जीवन में घिरे-घिरे विकारों की प्रवेशता होने से, दुख और अशान्ति बढ़ती जाती है. दुखि और अशान्त आत्मायें, भक्ति करते भगवान (बाबा) को ढूँढ़ती हैं, क्योंकि आत्मा को स्मृति है की उसने (भगवान ने) आकर ही हमें इस दुखो से मुक्त किया था. लेकिन भगवान के सत्य स्वरूप को न जानने के कारण उसे पाने के लिए पहाडो और जंगलों में भटकती है, पत्थरों और नदीओ में उसे ढूँढ़ती हैं.

अब भगवान, परमपिता-परमात्मा शिव, स्वयं आकर हम आत्माओं को कहते हैं, जब तक में खुद आकर तुम्हें मेरा सच्चा परिचय न दूँ तब तक तुम मुझे पा नहीं सकते. बाबा कहते हैं, ड्रामा अनुसार, कल्प पहले माफिक, में तुम्हारे निमन्त्रण पर ही आया हूँ. बाबा पुछते हैं, अब तुम्हें घर (परमधाम) जाने की दिल होती है?

बाबा हमें पवित्र बनने का रास्ता बताते हैं और कहते है - हे बच्चे, स्वयं को आत्मा समझ मुझ बाप को परमधाम में याद करो तो तुम्हारे जन्म-जन्मांतर के पाप नष्ट हो जायेंगे और आत्मा पावन बन जायेगी. पावन आत्मायें बाबा की याद में शरीर का त्याग करेंगी तो बाप के पास अवश्य पहोच जायेगी. इस पर गीता का श्लोक भी है - नष्टों मोहा, स्मृति लब्धा.

हम आत्माये बाबा के पास जाने के लिए तो बहुत जन्मो से प्रयत्न करते थे लेकिन वहॉ जाने का रास्ता हम भूल गये थे, सो अब बाप ने बताया हैं. परन्तु वहॉ पवित्र बन कर जाना हैं और फिर पहले-पहले सतयुग में आना हैं.

हम आत्माओं का अंतिम पुरुषार्थ हैं ----- "बाबा के साथ घर जाना हैं, फिर श्रीकृष्ण के साथ आना हैं."

ॐ शांति.